नागपुर में पालि भाषा के विश्वविद्यालय स्थापना हेतु
वर्धा के जिलाधिकारी का दिया ज्ञापन

वर्धा, 9 दिसंबर 2016: नागपुर में पालि भाषा के विश्वविद्यालय की स्थापना करने हेतु महाराष्ट्र राज्य के मुख्यमंत्री के नाम वर्धा के जिलाधिकारी शैलेष नवाल को महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के डॉ. भदंत आनंद कौसल्यायन बौद्ध अध्ययन केंद्र के प्रभारी निदेशक डॉ. सुरजीत कुमार सिंह ने शुक्रवार, 9 दिसंबर को ज्ञापन सौंपा है।

ज्ञापन में कहा गया है कि भगवान बुद्ध ने धम्म उपदेश के लिए पालि भाषा का प्रयोग किया था। पालि भाषा भारतीय भाषाओं की मूल भाषा है। सभी भारतीय भाषाओं पर पालि भाषा का प्रभाव है। विभिन्न बोलियों में पालि भाषा के शब्दों का प्रयोग होता हैं। पालि भाषा के संवर्धन के लिए भारतीय उपमहाद्वीप के तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, ओदंतपुरी, वल्लभी, जगद्दल,

नागार्जुनकोंडा, अमरावती, ललितगिरी, सारनाथ एवं सांची जैसे विश्वविद्यालयों का नाम लिया जाता है। विश्व में श्रीलंका, थाइलैण्ड, म्यानमार, कंबोडिया, लाओस, मलेशिया, विएतनाम आदि देशों में पालि भाषा का अध्ययन और अध्यापन हो रहा है। पश्चिम में भी इंग्लेड, जर्मनी, फ्रांस, कनाडा और अमेरिका में भी पालि भाषा का अध्ययन हो रहा है।

भारत में संस्कृत भाषा के अनेक विश्वविद्यालय एवं संस्थान हैं। पालि भाषा का एक भी विश्वविद्यालय या संस्थान पूरे भारतभर में नहीं है जबकि पालि भारतीय जंबूद्वीप की लोकप्रिय एवं जनभाषा रही है। ज्ञापन में मांग की गयी है कि पालि की महत्ता को देखते हुए महाराष्ट्र के नागपुर में पालि भाषा का विश्वविद्यालय बनाया जाना चाहिए। ज्ञापन सौंपते समय भंते राकेश आनंद, भंते लोकपाल शेलोकर, गोविंद मीणा, जितेंद्र कुमार सोनकर, रजनीश कुमार अंबेडकर, पन्नालाल धुर्वे, रवींद्र यादव और अनुसुमन बड़ा आदि उपस्थित थे।